अनुलग्नक - 'अ'

हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं. 002

कक्षा - 12

मार्च 2013

		अंक
(क) अपठित-बोध (गद्यांश और काव्यांश-बोध)	15+5	20
(ख) रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन		25
(ग) अंतरा (भाग-2)	● काव्य-भाग	20
	● गद्य-भाग	20
(घ) अंतराल (भाग-2)		15

क)	**अपठित बोध : (गद्यांश और काव्यांश बोध)**		**20**
1.	गद्यांश बोध : गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, स्थानांतरण तथा शीर्षक आदि पर अति / लघूत्तरात्मक प्रश्न		15
2.	काव्यांश बोध : दो में से एक काव्यांश पर आधारित पाँच अति लघूत्तरात्मक प्रश्न		5
(ख)	**रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन:**		**25**
3.	निबंध (विकल्प) (किसी एक विषय पर)		10
4.	कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित)		05
5.	रचनात्मक लेखन पर दो में से एक प्रश्न		05
6.	**'अभिव्यक्ति और माध्यम'** के आधार पर व्यावहारिक लेखन पर पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न	(1×5)	05
(ग)	**अंतरा भाग-2 (20+20 अंक)**		**40**
	काव्य-भाग:		20
7.	दो में से एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या		8
8.	कविता के कथ्य पर दो प्रश्न	(3+3)	6
9.	कविताओं के काव्य-सौंदर्य पर तीन में से दो प्रश्न	(3+3)	6

	***गद्य-भाग**		**20**
10.	दो में से एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या		06
11.	पाठों की विषय वस्तु पर तीन में से दो प्रश्न	(4+4)	08
12.	दो में से किसी एक कवि/लेखक का सहितियक परिचय		06
(घ)	**पूरक पुस्तक : अंतराल (भाग-2)**		**15**
13.	विषय वस्तु पर आधारित (**चार** में से **तीन** लघूत्तरात्मक प्रश्न)		04
14.	मूल्यपरक प्रश्न		05
15.	विषय वस्तु पर आधारित **दो** में से **एक** निबंधात्मक प्रश्न		06

निर्धारित पुस्तक :

(i) **अंतरा भाग-2** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

(ii) **अंतराल भाग-2** (विविध विधाओं का संकलन) एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

(iii) **अभिव्यक्ति और माध्यम** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

प्रश्न पत्र में 3-5 अंक का मूल्याधारित प्रश्न होगा।

Sl No.	Topic	Weightage
1.	अपठित गद्यांश	15
2.	अपठित काव्यांश	05
3.	निबंध लेखन	10
4.	पत्र लेखन	05
5.	रचनात्मक लेखन	05
6.	अभिव्यक्ति माध्यम	05
7.	पठित काव्यांश व प्रश्नोत्तर	20
8.	पठित गद्यांश व प्रश्नोत्तर } *मूल्यपरक प्रश्न	15+5
9.	पूरक पुस्तक प्रश्न	15
	कुल अंक	100

प्रश्न पत्र में 3-5 अंक का मूल्याधारित प्रश्न होगा।

आदर्श प्रश्नपत्र का प्रारूप - 2013

हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं. 002

कक्षा - 12

प्रश्न का प्रकार	अंक	प्रश्नों की कुल संख्या	कुल अंक
अतिलघूत्तरीय प्रश्न	1	12	12
लघूत्तरीय प्रश्न-I	2	7	14
लघूत्तरीय प्रश्न-II	3	7	21
दीर्घउत्तरीय प्रश्न-I	4	2	8
दीर्घउत्तरीय प्रश्न-II	5	3	15
अतिदीर्घउत्तरीय प्रश्न-I	6	2	12
अतिदीर्घउत्तरीय प्रश्न-II	8	1	8
अतिदीर्घउत्तरीय प्रश्न-III	10	1	10
कुल			**100**

प्रश्न पत्र में 3-5 अंक का मूल्याधारित प्रश्न होगा।

कक्षा - XII (2013)

हिन्दी ऐच्छिक

निर्धारित समयः 3 घंटे **पूर्णांक : 100**

खण्ड - क

प्रश्न-1निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए- 15अंक

आज मानव की जीवन-शैली में बदलाव आ गया है। लोग अंधाधुंध पाश्चात्य जीवन-शैली का अनुसरण करने लगे हैं। नई परंपराओं और रीति-रिवाज़ों को अपनाने की चाह में पुराने स्थापित जीवन मूल्य व परंपराएँ पीछे छूटती जा रही हैं और लोग इसे ही आधुनिक जीवन शैली का नाम दे रहे हैं। आज युवा वर्ग धन को ही सब कुछ मानकर धन कमाने के पीछे भाग रहा है। हर व्यक्ति को यह डर है कि कहीं कोई आगे न निकल जाए। किसी के भी पास अपनों के लिए समय नहीं है। पारिवारिक व सामाजिक संबंधों का कोई सरोकार नहीं है। उन्हें केवल धन चाहिए वह चाहे जैसे भी मिले। आधुनिक जीवन शैली ने लोगों में अनियंत्रित और असंतुलित भोग और उपयोग की आदत को जन्म दिया है। एक-दूसरे की देखादेखी में लोग जिन वस्तुओं की आवश्यकता भी नहीं होती उन्हें भी खरीदकर अपने धन की क्रय-शक्ति का प्रदर्शन कर संतुष्टि का अनुभव करते हैं। महँगे होटलों में भोजन करना, अंग्रेजी फिल्में देखना, महँगे वस्त्र खरीदना, आधुनिकता के पर्याय बन गए हैं। प्रदर्शन करना ही जीवन पद्धति का अनिवार्य लक्ष्य बन कर रह गया है। जीवन को मौजमस्ती का पर्याय माना जाने लगा है। परिश्रम, धीरज, संतोष जैसे गुण मानों मृतप्राय हो गए हैं। आधुनिक जीवन पद्धति से प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या व स्वार्थ को बढ़ावा मिला है।

(i) आज आधुनिकता का पर्याय किसे माना जाने लगा है? 2

(ii) आज आधुनिक जीवन शैली किसे माना जा रहा है? 2

(iii) युवावर्ग ने किसे जीवन लक्ष्य मान लिया है? 2

(iv) आधुनिक जीवन पद्धति से किस आदत को बढ़ावा मिला है? 2

(v) आधुनिक जीवन शैली ने मानव में किस आदत को निम्न सा कर दिया है 2

(vi) पारिवारिक शब्द में मूल शब्द व प्रत्यय अलग-अलग करके लिखें। 1

(vii) स्वार्थ का विलोम शब्द क्या है? 1

(viii) 'अपनो के लिए समय नही है' - का यहाॅ क्या तात्पर्य है? 1

(ix) माँग एव उपयोग अपने मे गलत नही है, फिर लेखक का उनके बारे मे आपत्ति जताने का क्या कारण है? 2

प्रश्न-2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए। 5 अंक

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ -
जब तुम मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं -
धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।
पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ
प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्या हो जाती हूँ।
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।

प्रश्न- (क) पुरुषार्थ को सबसे बड़ा देवत्व क्यों कहा गया है?

(ख) मिट्टी चिन्मयी शक्ति कब बन जाती है, कैसे?

(ग) मातृरूपा बनने के लिए मिट्टी कौन-कौन से कष्ट झेलती है?

(घ) मिट्टी मातृरूपा कब बन जाती है?

(ङ) 'मैं तो मात्र मृतिका हूँ' कहने का क्या अभिप्राय है?

अथवा

कितने ही कटुतम काँटे तुम मेरे पथ पर आज बिछाओ,
और अरे चाहे निष्ठुर कर का भी धुँधला दीप बुझाओ।
किंतु नहीं मेरे पग ने पथ पर बढ़कर फिरना सीखा है।
मैंने बस चलना सीखा है।
कहीं छुपा दो मंज़िल मेरी चारों ओर निमिर-घन छाकर,
चाहे उसे राख कर डालो नभ से अंगारे बरसाकर,
पर मानव ने तो पग के नीचे मंज़िल रखना सीखा है।
मैंने बस चलना सीखा है।
कब तक ठहर सकेंगे मेरे सम्मुख ये तूफान भयंकर
कब तक मुझसे लड़ा पाएगा इंद्रराज का वज्र प्रखरतर
मानव की ही अस्थिमात्र से वज्रों ने बनना सीखा है।
मैंने बस चलना सीखा है।

प्रश्न- (क) इस काव्यांश में किसकी महिमा बताई गई है?

(ख) मानव के सामने क्या नहीं टिक पाता और क्यों?

(ग) साहसी मानव की मंजिल कहाँ रहती है और क्यों?

(घ) इस काव्यांश का मूल सँदेश क्या है?

(ड) 'अस्थिमात्र से वज्र बनना' इस पंक्ति से किस कथा की ओर संकेत किया गया है।

खण्ड - ख

प्रश्न-3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। (लगभग 400 शब्द) 10 अंक

(क) संचार क्रांति के लाभ

(ख) व्यायाम और स्वास्थ्य

(ग) मतदान अधिकार का पहली बार प्रयोग

(घ) दूरदर्शन: विकास या विनाश

प्रश्न-4 परिवहन-निगम के अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें आपके गाँव या कॉलोनी तक बस चलाने का अनुरोध हो। **5 अंक**

अथवा

सर्वेक्षण करने वाली संस्था 'तीसरी आँख' को घर-घर जाकर सर्वेक्षण करने के लिए कुछ युवक-युवतियों की आवश्यकता है। अपनी रूचि और योग्यता का विवरण देते हुए आवेदन पत्र लिखिए।

प्रश्न-5 संचार-माध्यमों में दूरदर्शन की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताइए कि दूरदर्शन समाचार वाचक में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? **5 अंक**

अथवा

समाचार किस शैली में लिखा जाता है? उस शैली के कौन-कौन से भाग होते हैं? संक्षेप में उनका परिचय दीजिए।

प्रश्न-6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए। 1×5=5 अंक

(क) फीचर का क्या उद्देश्य होता है?

(ख) संपादकीय क्या होता है?

(ग) प्रिंट या मुद्रित जनसंचार माध्यम के दो रूप बताइए।

(घ) पत्रकार का क्या दायित्व है?

(ङ) रेडियो समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?

खण्ड 'ग'

प्रश्न–7 निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **8 अंक**

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरस तामरस गर्भ–विभा पर – नाच रही तरुशिखा मनोहर।

छिटका जीवन हरियाली पर–मंगल कुंकुम सारा।

लघु सुरधनु से पंख पसारे–शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस और मुँह किए – समझ नीड़ निज प्यारे।

बरसाती आँखों के बादल – बनने जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकराती अनंत की – पाकर जहाँ किनारा।

हमे कुंभ ले उषा सवेरे – भरती दुलकाती सुख मेरे।

मदिर ऊँघते रहते जब – जगक रजनी भर तारा।

अथवा

पुलकि सरीर सभा भए ठाड़े। नीरज नयन नेहजल बाढ़े।।

कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।

मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।।

मो पर कृपा सनेहु बिसेखी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।

सिसुपन ते परिहरेऊँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।।

मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेंहु खेल जितवाहिं मोंही।।

महूँ सनेह संकोच बस सनमुख कही न बैन।

दरसन तृपित न आज लगि पेम पिआसे नैन।।

प्रश्न–8 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं <u>दो प्रश्नों</u> के उत्तर दीजिए। **3+3=6 अंक**

(क) राम के वनगमन के बाद उनकी वस्तुओं को देख–देखकर माता कौशल्या की मन:स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) 'वसंत आया' कविता में कवि ने किस विषय पर चिंता प्रकट की है?

(ग) बनारस में धीरे-धीरे क्या-क्या होता है? धीरे-धीरे से कवि इस शहर के बारे में क्या कहना चाहता है?

प्रश्न-9 निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 3+3=6 अंक

(क) तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो
ये ऊसर बंजर तोड़ो
ये चरती परती तोड़ो
सब खेत बनाकर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?
गोड़ो-गोड़ो-गोड़ो

(ख) इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के से शतदल।
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण।
कर करता मैं तेरा तर्पण।

(ग) यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुतः इसको भी शक्ति दे दो।
यह दीप, अकेला स्नेह भरा है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

प्रश्न-10 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 3+3=6 अंक

(क) आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से। आँखों देखा ढेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेज पिंड से।

अथवा

मैंने देखा कि झाड़ी की ओर भी गज़ब की चीज़ है। अगर झाड़ियाँ न हों तो शेर का मुँह ही मुँह हो और फिर उससे बच पाना बहुत कठिन हो जाए। कुछ देर के

बाद मैंने देखा कि जंगल के छोटे-मोटे जानवर एक लाइन से चले आ रहे हैं और शेर के मुँह में घुसते चले जा रहे हैं। शेर बिना हिले-डुले, बिना चबाए, जानवरों को गटकता जा रहा है। यह दृश्य देखकर मैं बेहोश होते-होते बचा।

प्रश्न-11 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4+4=8 अंक

(क) बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?

(ख) संग्रहालय के लिए अलग विशाल भवन का निर्माण आवश्यक क्यों हो गया?

(ग) आराफ़ात ने ऐसा क्यों कहा कि 'वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं, उतने ही आदणीय जितने आपके लिए।' इस कथन के आधार पर गांधी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-12 जयशंकर प्रसाद अथवा तुलसीदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं में से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। **6 अंक**

अथवा

रामचंद्र शुक्ल अथवा फणीश्वरनाथ 'रेणु' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली की दो प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-13 निम्नलिखित में से किन्हीं <u>तीन प्रश्नों</u> के उत्तर दीजिए। 2+2= 4 अंक

(क) आरोहण कहानी में हिमांग पर ऊपर पहुँचकर रूप ने क्या देखा?

(ख) सूरदास को झोंपड़ी के जल जाने पर किस बात का ज़्यादा दुख था?

(ग) विस्कोहर की माटी पाठ में वर्णित गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए।

(घ) धरती का वातावरण गर्म क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? (अपना मालवा .... पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

प्रश्न-14 निम्नलिखित पाठांश के आधार पर पूछे गये प्रश्न का उत्तर दीजिये।

सूरदास कहाँ तो नैराश्य, ग्लानि, चिंता और क्षोभ के अपार जल में गोते खा रहा था, कहाँ यह चेतावनी सुनते ही उसे ऐसा मालूम हुआ, किसी ने उसका हाथ पकड़कर किनारे पर खड़ा कर दिया। वाह! मैं तो खेल में रोता हूँ। कितनी बुरी बात

है! लड़के भी खेल में रोना बुरा समझते हैं, रोनेवाले को चिढ़ाते हैं, और मैं खेल में रोता हूँ। सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाज़ी-पर-बाज़ी हारते हैं, चोट-पर-चोट खाते हैं, धक्के-पर-धक्के सहते हैं पर मैदान में डटे रहते हैं, उनकी त्योरियों पर बल नहीं पड़ते। हिम्मत उनका साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे भी नहीं आते, न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं। खेल में रोना कैसा? खेल हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं।

प्रश्न (क) **सूरदास की विशेषता यह है कि झोंपड़ी जला दिये जाने के बावजूद भी वह किसी से प्रतिशोध लेने में विश्वास नहीं करता बल्कि पुनर्निमाण में विश्वास करता है। क्या इस प्रकार का चरित्र आज के परिप्रेक्ष्य में भी उचित है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करें। (मूल्यपरक प्रश्न)** **3 अंक**

प्रश्न (ख) **जीवन में आगे बढ़ने हेतु सकारात्मक प्रवृत्ति की आवश्यकता है। इस तथ्य को न्याय संगत ठहराने हेतु तर्क प्रस्तुत कीजिए। (मूल्यपरक प्रश्न)** **2 अंक**

प्रश्न-15 आपकी पर्यावरण के विषय में क्या संवेदना है? आप पर्यावरण के विनाश को बचाने के लिए क्या-क्या उपाय कर सकते हैं? **6 अंक**

अथवा

'विस्कोहर की माटी' पाठ में गाँव के बारे में आपको क्या-क्या जानकारियाँ मिलीं? कम से कम छह जानकारियों का उल्लेख कीजिए।

कक्षा - XII (2012-13)

हिन्दी (ऐच्छिक)

<u>उत्तरमाला</u>

प्रश्न–1 **15**

(i) प्रदर्शन करना, मौजमस्ती करना 2

(ii) नई परंपराओं और रीतिरिवाज़ों को अपनाना तथा पुराने स्थापित जीवन मूल्यों व परंपराओं की अवहेलना करना। 2

(iii) धन कमाना व प्रदर्शन करना। 2

(iv) ईर्ष्या व स्वार्थ भावना को 2

(v) परिश्रम, धीरज, संतोष 2

(vi) परिवार+इक प्रत्यय 1

(vii) निस्वार्थ 1

(viii) कोई भी एक: मानवीय संवेदना, अपनापन, मिलकर बातचीत करना का अभाव, अन्य कार्यों मे अत्याधिक व्यस्त रहना 1

(ix) असंतुलित, अनियंत्रित 1

प्रश्न–2 **2×5=10**

(क) पुरुषार्थ द्वारा ही मनुष्य मिट्टी को विभिन्न आकार देता है। मनुष्य के पुरुषार्थ के परिणामस्वरूप ही मिट्टी चिन्मयी शक्ति का रूप धारण करती है। पुरुषार्थ ही हर सफलता का मूलमंत्र है। इसलिए उसे सबसे बड़ा देवत्व माना गया है। 1

(ख) आराध्या प्रतिमा बनकर। वह पराजित मनुष्य को सांत्वना देकर उसे बल प्रदान करती है। 1

(ग) पाँव से रौंदे जाने की पीड़ा व हल के फाल से विदीर्ण होने की पीड़ा को। 1

(घ) रौंदे और जोते जाने पर मिट्टी धन–धान्य से भरपूर होकर मातृरूपा बनकर माँ के समान हमारा भरण–पोषण करती है। 1

(ङ) मिट्टी स्वयं को साधारण मानती है परन्तु वह मनुष्य के पुरुषार्थ स्वरूप भिन्न–भिन्न आकार पाती है। 1

अथवा

(क) मानव के अदम्य साहस व शक्ति की। इसके सहारे मानव निडर होकर मार्ग की कठिनाईयों पर विजय पाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही दम लेता है। 1

(ख) भयंकर तूफान। वे भी मानव के अदम्य साहस के सामने हार मान जाते हैं। 1

(ग) उसके पैरों तले रहती है। उसकी इच्छाशक्ति के सामने प्राकृतिक आपदाएँ भी शर्मा जाती हैं वह अपनी मंजिल अंधकार से भी ढूँढ कर निकाल लेता है। 1

(घ) मानव के बढ़ते कदमों को कोई भी शक्ति रोक नहीं पाती। रास्ते में आने वाली मुसीबतें उसके बढ़ते कदमों को पीछे लौटा नहीं सकतीं। 1

(ङ) दधीचि ऋषि द्वारा मानवता के लिए अपनी अस्थियाँ भी दान में दे देना – इस कथा की ओर संकेत है। उनकी अस्थियों से बने वज्र से ही वृत्रासुर नामक राक्षस का वध किया गया था। 1

प्रश्न–3

(क) प्रस्तावना 2

(ख) विषयवस्तु का सुसम्बद्ध प्रतिपादन 2

(ग) भाषा शुद्धता 2

(घ) विचाराभिव्यक्ति / प्रस्तुतकरण 2

(ङ) उपसंहार 2

प्रश्न–4

आरम्भं एवं समाप्ति – औपचारिकताएँ 2

विषयवस्तु का प्रतिपादन 2

भाषा शुद्धता 1

प्रश्न-5

आधुनिक संचार माध्यमों में दूरदर्शन सर्वाधिक प्रभावशाली और सशक्त माध्यम है। यह दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इससे सूचना की विश्वसनीयता में वृद्धि होती है। दूरदर्शन की सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की आवश्यकताओं को पूरा करने में विशिष्ट भूमिका है। इसमें अनेक कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। 5

दूरदर्शन समाचार वाचक के गुण :-

(क) वाचक की भाषा में शुद्धता, मधुरता, सहजता और सुबोधता के साथ-साथ मतिमयता होनी चाहिए।

(ख) उसकी भाषा में आम बोलचाल की भाषा के शब्द हों।

(ग) चेहरे के हाव भाव भावों के अनुकूल होने चाहिएँ।

(घ) वाक्य छोटे-छोटे हों। एक वाक्य में एक ही बात कही जाए।

(ङ) वाक्यों में तारतम्यता हो।

(च) कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहने की कला हो।

अथवा

समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है। इस शैली के तीन भाग होते हैं :-

(1) इट्रो या मुखड़ा (2) बॉडी (3) समापन।

इस शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है। उसके बाद घटतेक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा जाता है। इंट्रो समाचार का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। इसमें समाचार के मूल तत्व को दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। बॉडी में समाचार के विस्तृत विवरण को घटते महत्वक्रम में वर्णन होता है। इसमें व्याख्यात्मक पक्ष पर बल दिया जाता है। यह प्रक्रिया समाचार के समापन तक जारी रहती है। समापन का होना आवश्यक नहीं है।

प्रश्न-6

(क) पाठकों को सूचना देना व शिक्षित करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना। 1

(ख) वह लेख जिसमें किसी मुद्दे के प्रति समाचार पत्र की अपनी राय प्रकट होती है। 1

(ग) समाचार पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें। 1

(घ) पाठकों अथवा दर्शकों तक सूचना पहुँचाना, उन्हें जागरूक और शिक्षित करना व उनका मनोरंजन करना। 1

(ङ) सरस, आमबोलचाल की सुस्पष्ट भाषा, निरक्षरों के लिए बोधगम्य। 1

प्रश्न-7 काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या :-

संदर्भ - कविता और कवि का नाम 1

कविता का प्रसंग 1

व्याख्या - व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण 4

विशेष - काव्य पंक्तियों की शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख 1

भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली 1

प्रश्न-8

(क) राम के बनगमन के बाद राम की वस्तुओं को निहारते-निहारते माता कौशल्या की मनोस्थिति अत्यंत करुणामय हो जाती है। पुत्र वियोग में भाव-विह्वल माता धनुष-बाण, जूतियों को आँखों व हृदय से लगाती है। उन चीज़ों को देखकर राम के बालपन का स्मरण करती हैं व उनका दु:ख और बढ़ जाता है। 3

(ख) आज मानव की जीवन शैली इतनी व्यस्तपूर्ण हो गई है कि आज उसका प्रकृति के साथ नाता टूटता जा रहा है। अब वह ऋतु आगमन का अनुभव नहीं करता वरन् कलैंडर या छुट्टी होने से उसका जाना-आना पाता है। आधुनिक जीवनशैली पर करारा व्यंग्य किया है। कवि इस बात को लेकर चिंतित है कि वसंत जैसी मादक ऋतु भी मानव को आह्लादित नहीं कर पाती। उसे यह पता नहीं चल पाता कि कब कौंपलें फूट आई हैं कैसे भंवरे फूलों पर मंडरा रहे हैं। 3

(ग) धूल उड़ती है, लोग धीरे-धीरे चलते हैं, मंदिरों के घंटे धीरे-धीरे बजते हैं। बनारस में शाम भी धीरे-धीरे होती है। धीरे-धीरे कहने से कवि का तात्पर्य यह है कि वहाँ स्वभाव अथवा व्यवहार में भागमभाग और उतावलापन नहीं है। धीरे-धीरे के चरित्र के कारण यहाँ की प्राचीन संस्कृति, आस्था, विश्वास श्रद्धा भक्ति सब अक्षुण्ण है। 3

प्रश्न-9काव्यसौन्दर्य **3 + 3 =6**

भाव-सौंदर्य - स्पष्टीकरण

शिल्प-सौंदर्य - स्पष्टीकरण

प्रश्न-10 गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या :- **6**

संदर्भ - पाठ और लेखक का नाम 1

पूर्वापर संबंध 1

व्याख्या - प्रमुख व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण 3

विशेष - विशेष टिप्पणी और भाषा शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख। 1

प्रश्न-11 दो प्रश्नों के उत्तर **4+4=8**

(क) रटे-रटाए गए प्रश्नों और उत्तरों से बालक की सहज प्रवृत्ति का गला घुटता प्रतीत हो रहा था। लड्डू की इच्छा स्वाभाविक व बाल सुलभ थी। यह उत्तर बालमन के अनुरूप था। लेखक को लगने लगा कि बालक में अभी भी उसका बालपन शेष है हालांकि उसके अध्यापक व पिता ने उसकी बाल सुलभ प्रवृत्तियों को समाप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

(ख) लेखक ने संग्रहालय के लिए सामग्री इकट्ठी करने में आशातीत सफलता प्राप्त कर ली थी। अब संग्रहालय में दो हज़ार पाषाण मूर्तियाँ, पाँच-छः हजार मृण्मूर्तियाँ, कई हज़ार चित्र, कई हज़ार हस्तलिखित पुस्तकें, हजारों सिक्के, मोहरें व मनके आदि एकत्र हो गए थे। जिनका संरक्षण करना व प्रदर्शन करना आसान कार्य नहीं था। इसलिए पृथक विशाल भवन का निर्माण आवश्यक हो गया था।

(ग) भारत के नेता अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर फिलिस्तीन का समर्थन करते थे। अराफ़ात भारतीय नेताओं के निकट संपर्क में थे इसलिए भारतीय नेताओं के प्रति उनके मन में आदर-भाव होना स्वाभाविक था।

गाँधी जी स्वतंत्रता व मानवता प्रेमी थी। देश, धर्म, जाति व संप्रदाय की सीमाओं से ऊपर उठे थे। सभी मनुष्य उनके लिए समान थे। अन्याय व अत्याचार के विरोधी थे।

प्रश्न–12 लेखक / कवि का जीवन परिचय **6**

(क) संक्षिप्त जीवन–परिचय 2

(ख) रचनाओं के नाम, साहित्यिक योगदान 2

(ग) दो काव्यगत या भाषागत विशेषताओं का स्पष्टीकरण 2

प्रश्न–13 **2+2=4**

(क) ऊपर पहुँचकर रूप ने देखा कि पहाड़ की पीठ पर कुछ दूरी तक ज़मीन प्रायः समतल थी, इसमें मकई की फसल खड़ी थी। चारों तरफ देवदार और सेब के पेड़ थे। पेड़ों पर सेब लगे थे। पेड़ पुराने नहीं थे। एक गुफानुमा आश्रम था, बगल में दो झोंपड़े थे। एक छप्पर के नीचे एक चुस्त, जवान, नाटी, गोरी औरत खड़ी थी। हिमांग के ऊपर वाले भाग से कोई झरना झर रहा था जो खेतों से गुज़रते हुए सूपिन नदी में बहता था। 3

(ख) झोंपड़ी के जलने का, बरतन आदि जलने का भी अधिक दुःख न था। दुःख था तो उस पोटली का जो उसकी उम्र भर की कमाई थी। यही कमाई उसकी जीवन भर की आशाओं का आधार थी। इस छोटी सी पोटली में उसका, उसके पितरों का, उसके बेटे मिठुआ का उद्धार संचित था, यही पोटली उसके लोक–परलोक का आशा दीपक थी। पोटली के न मिलने से उसकी सारी इच्छाओं पर पानी फिर गया।

(ग) लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना दिया जाता है। कच्चे आम को भूनकर, गुड़ या चीनी मिलाकर उसका शरबत बनाया जाता है। कच्चे आम अथवा प्याज का शरीर पर लेप करके नहाया जाता है। गरमी और लू से बचने हेतु कमीज़ की जेब में प्याज रखी जाती है। सूती कपड़े पहनने चाहिएँ। इन पर लू असर नहीं करती।

(घ) हमारी औद्योगिक सभ्यता उजाड़ को बढ़ावा दे रही है। औद्योगिक इकाइयों द्वारा अत्यधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित की जाती है, यह गैस वायुमंडल में मिलकर धरती के वातावरण को गर्म कर रही है, इस कारण धरती का तापमान तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। कार्बनडाइऑक्साइड गैस सबसे अधिक यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देशों के उद्योगों से निकलकर वातावरण को प्रदूषित कर रही है, ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है, मौसम चक्र बिगड़ रहा है।

प्रश्न–14 (क) समाज में प्रतिशोध की भावना की अपरिहार्यता जैसे विषय पर निम्नलिखित उदाहरणों जैसे कोई तीन बिन्दु **3**

- प्रतिशोध की भावना अधिकतर ऐसे व्यक्तियों में पाई जाती है जो शक्ति, सत्ता तथा पद की अभिलाषा से ओत-प्रोत होते हैं तथा कभी अपने आप को नीचा नहीं होने देना चाहते। ऐसे व्यक्ति किसी नियम, परम्परा व सामाजिक व्यवस्था की परवाह नहीं करते। यदि समाज में ऐसे व्यक्ति अधिक हो जाएँगें तो सामाजिक व्यवस्था में अप्रतिकार्य ह्रास होगा तथा वह ध्वस्त हो जाएगी। समाज में विषमताएँ बढ़ जाएँगी तथा अधिकतर लोग कुंठित हो जाएँगे।
- लोगों में क्षमा भाव, परोपकारिता व अन्य सार्वभौमिक मूल्यों का अभाव हो जाएगा। यह समाज को पतन की ओर ले जाएगा।
- प्रतिशोध क्रोध के कारण उत्पन्न एक हिंसात्मक (शारीरिक अथवा मानसिक) प्रतिक्रिया है। यह पथ से भटके हुए व्यक्ति का वह प्रयास है जिसमें वह अपनी लज्जा को अपनी प्रतिष्ठा में बदलना चाहता है। प्रतिशोध से किसी को कभी भी लाभ नहीं पहुँचा है। यह केवल तंत्रिका-तंत्र में उत्पन्न होने वाली उत्तेजनाओं से प्राप्त होने वाले भ्रामक आनन्द जैसा होता है। इसलिए सभी मनुष्यों को ऐसी व्यवस्था स्थापित करने में सहायता करनी चाहिए जिसमें सभी जनों को समानता प्राप्त हो व समाज में प्रतिशोध की भावना समाप्त हो जाए।

(ख) जीवन की सार्थकता हेतु सकारात्मक चरित्र की आवश्यकता के विषय पर निम्नलिखित उदाहरणों जैसे कोई दो बिन्दु **2**

- यदि हमारा चरित्र सकारात्मक होगा तो हम लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक से अधिक प्रयास करने के लिए अभिप्रेरित रहेंगे।
- यदि हमारा चरित्र सकारात्मक होगा तो कठिनाइयाँ कठिनाइयाँ न होकर सीखने व आगे बढ़ने के अवसर बन जाएँगी।
- हमारा आत्मविश्वास ऊँचा रहेगा तथा हम अपने आप में विश्वास रख सकेंगे।
- यदि हम सकारात्मक हुए तो हमें तनाव कम होगा तथा हमारे अधिक मित्र होंगे। हम अपने कार्य से आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्न–15

हाँ, हमें पर्यावरण की चिंता है। एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते हम पर्यावरण को विनाश से बचाने हेतु निम्न उपाय कर सकते हैं :- 6

(क) औद्योगिक विकास और पर्यावरण में संतुलन स्थापित करना।

(ख) वाहनों का सीमित प्रयोग

(ग) ध्वनि विस्तारक यंत्रों को नियंत्रित करना।

(घ) पानी का दुरुपयोग रोकना।

(ङ) पर्यावरण बचाओ आंदोलन चलाना व जनता को जागरुक करना।

(च) अधिक से अधिक वृक्ष लगाना व उनकी देखभाल करना।

(छ) नदियों के जल को दूषित करने से रोकना।

(ज) पेड़ों को काटने से रोकना, काटने वालों का विरोध करना।

अथवा

(क) तालाब में कमल के फूल खिले रहते हैं।

(ख) भोज कमल पत्र पर परोसा जाता है।

(ग) कमल गट्टा व कमल ककड़ी खायी जाती है।

(घ) पितृपक्ष में घर के द्वार पर हरसिंगार के फूल रखे जाते हैं।

(ङ) कई रोगों में वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है।

(च) गाँव में सरसों, गेहूँ मक्का जौं और धान की खेती की जाती है।?

(छ) गाँव में नैसर्गिक सौन्दर्य होता है। वातावरण प्राकृतिक एवं शुद्ध होता है।

(ज) वर्षा ऋतु में शौच कर्म के लिए जगह मिलनी कठिन।

(झ) वर्षा ऋतु में कीचड़ और कीड़े–मकौड़ो का अधिक्य।

(ञ) साँप बिच्छू डाँस, जोंक, मच्छर आदिकाभय।